ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 102-104

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

राम की शक्ति पूजा व राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन

चंदन कुमार

नेट/जेआरएफ, शोध अध्येता– हिंदी विभाग, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना (बिहार) भारत

Received-15.10.2022, Revised-21.10.2022, Accepted-26.10.2022 E-mail: chandan143dev@gmail.com

सारांशः *भारत अपने आजादी का 75 वाँ साल बड़े धूमधाम और गर्मजोशी के साथ मना रहा है। आजादी के 'अमृत महोत्सव' के इस इस पावन अवसर पर हम ऐसी कृतियों को रेखांकित करने का विनम्र प्रयास कर रहे हैं, जिन्होंने भारतीयता को सही मायने में परिभाषित करने तथा उसके माध्यम से एक बौद्धिक विमर्श का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास किया है। ऐसे में निराला कृत 'राम की शक्ति पूजा' के बिना आजादी का अमृत महोत्सव अधूरा सा लगेगा क्योंकि आजादी के बीज बोने वाले कविताओं में 'राम की शक्ति पूजा' अपना विशेष स्थान और महत्व रखता है। इस लम्बी कविता में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा राम का ईश्वरीय चरित्र को मानवीय चरित्र के रूप में गढ़ा गया है तथा सीता मुक्ति के बहाने भारत माता की मुक्ति के तरफ इशारा किया गया है। राम की शक्तिपूजा, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित काव्य है। कहा जाता है कि इलाहाबाद (प्रयागराज) से प्रकाशित दैनिक समाचारपत्र 'भारत' में पहली बार 26 अक्टूबर 1936 को उसका प्रकाशन हुआ था। इसका मूल निराला के कविता संग्रह 'अनामिका' के प्रथम संस्करण में छपा था। राम की शक्ति पूजा में पराजयबोध तथा उससे उबरने का संघर्ष उसी तरह व्याप्त है जिस तरह परतंत्र भारत में आम नागरिकों के बीच अपनी गरिमा के खो जाने की अकुलाहट और उसे हासिल करने की तत्परता थी।*

कुंजीभूत शब्द– धूमधाम, गर्मजोशी, विमर्श, प्रशस्त, आजादी का अमृत महोत्सव, ईश्वरीय चरित्र, मानवीय चरित्र,परतंत्र।

राम की शक्ति पूजा सन 1936 की रचना है तथा इसके संश्लिष्ट अर्थ का एक सूत्र राष्ट्रीय आंदोलन से भी जुड़ता है। छायावादी कवियों पर अक्सर यह आक्षेप लगता रहा है कि वे राष्ट्रीय आंदोलन के सघनतम काल में उपस्थित होकर भी उससे कटकर रहे। यह सत्य है कि राम की शक्ति पूजा जैसी कविताओं में राष्ट्रीय आंदोलन का रोजनामचा हमे चाहे न दिखे। परन्तु, उसके मूल हर मोड़ पर दिखते हैं।

कालजई कविता की यही पहचान होती है कि वह अपने समय के संदर्भों से सीमित नहीं होती बल्कि उन्हें कालमुक्त कर देती है। राम की शक्ति पूजा में राष्ट्रीय चेतना इसी स्तर पर उपस्थित दिखलाई देता है। कविता में राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित कई प्रसंग प्रतीकात्मक रूप में उपस्थित है, जिन्हें क्रमशः विश्लेषित किया जा सकता है–

कविता की मूल समस्या है 'अन्याय जिधर है उधर शक्ति।' शक्ति, रावण अर्थात अंग्रेजों के पक्ष में है, जिन्होंने साधना से उसे अपने वशीभूत किया हुआ है। शक्ति नैतिक पक्ष में नहीं है– यही राम अर्थात राष्ट्र नायक की चिंता है–

"रावण अधर्मरत भी अपना मैं हुआ अपर।"

1936 ई. का भारत, शक्ति की मौलिक कल्पना की तलाश में है। गांधी जी का एक वर्ष में स्वाधीनता दिलाने का वायदा तो खंडित हो चुका है, उसके दस वर्ष बाद दूसरा महान आंदोलन 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' भी लोगो ने विफल होता हुआ देखा है। सविनय अवज्ञा आंदोलन की विफलता ने राष्ट्रीय नेतृत्व के मन में घोर निराशा, संशय, पराजय बोध भर दिया है। गांधी व उनकी वाहिनी के अन्य सदस्य भी चिंतित है जो राम के प्रतीक के रूप से व्यक्त हुआ है।

"स्थिर राघवेंद्र को हिला रहा फिर–फिर संशय,
रह–रह उठता जग जीवन में रावण–जय–भय,
जो नहीं हुआ आज तक हृदय रिपु–दम्य–श्रांत,
एक भी अयुत–लक्ष्य में रहा जो दुराक्रान्त,
कल लड़ने को हो रहा विकल वह बार–बार,
असमर्थ मानता मन उद्यत हो हा हार–हार।"

कविता ही शुरुआती वर्णन भी यही दिखा रहा है कि इसके नायक को अपने जिन अस्त्रों पर दुनिया जीत लेने का विश्वास था, वे अस्त्र विफल हो गए हैं। अंग्रेजों के शक्तिशाली राज्य के विरुद्ध लड़ते–लड़ते भारतीय जन और उसके नायक गांधी जी की आशाएं धूमिल हो गई हैं। उनके शरीर पर विफलताओं के घाव है, मुट्ठियाँ बंधी हैं फिर भी हिम्मतरूपी रुधिर बह रहा है।

अनिमेष राम विश्वजिद्दिव्य शरभंग भाव, वद्धांगबद्ध कोदण्ड मुष्टि खर रुधिर स्राव

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

ऐसा नहीं कि अहिंसा का कोई विकल्प नहीं है, कविता में हनुमान की आक्रामकता किसी न किसी रूप में हिंसा के मार्ग को ही संकेत करता है। क्रांतिकारी आतंकवाद के दो दौर विफल हो चुके हैं। राष्ट्रीय स्वभाव के साथ चलने के लिए हिंसा मार्ग पर चलना कठिन था, इसलिए राम या एक अर्थ में गांधी हिंसक शक्ति की उपलब्धता के बावजूद उसका प्रयोग करने से बच रहे हैं। हिंसा में निहित अविवेक कई ऐसी स्थितियां पैदा करता है, जिन्हें धारण करना संभव नहीं होता। इसकी सीख हमे चौरी–चौरा की घटना से मिली थी–

"क्या असम्भाव्य हो यह राघव के लिए धार्य"

यह तय है कि पारंपरिक नैतिक मार्ग यानी अहिंसा का मार्ग पूर्णतः ठीक नहीं है, क्योंकि वह आज के युद्ध में श्रीहत, खंडित हो चुका है। हिंसा या आक्रामकता का मार्ग भी पूर्णतः ठीक नहीं है। प्रश्न यह है कि रावण अर्थात अंग्रेजों के चंगुल में फँसी सीता जो एक अर्थ में भारतीय स्वाधीनता अथवा भारतीय अस्मिता की रक्षा कैसे हो? 'शक्ति की मौलिक कल्पना' इसके समाधान का रास्ता दिखाती है। इसके नैतिक पक्ष पर बना रहेगा किंतु इसमे शक्ति के तत्व भी शामिल होगा। इसलिए राम अपने प्रतीक के रुप में सिंह को चुनते हैं– 'मैं सिंह इसी भाव से करूंगा अभिनंदित"। सिंह होने का मतलब है– शक्ति से आप्लावित होना, प्रचंड आवेग और दुर्दम्य में जिजीविषा के साथ अस्मिता के युद्ध को जीतने का प्रयास करना। किंतु, यह सिंह अनिवार्यतः नैतिकता के पक्ष में ही शक्ति का प्रयोग करेगा क्योंकि यह जनरंजन–चरण–कमल स्थित है–

'जनरंजन–चरण–कमल–तल धन्य सिंह गर्जितजशषदज्व'

शक्ति साधना की प्रक्रिया कृतिवास रामायण में बहिर्मुखी है, किंतु इस कविता में अंतर्मुखी। इस कविता में महाशक्ति को प्रकृति के रूप में देखा गया है अर्थात प्रकृति का ही दैवीकरण हुआ है। दोनों संकेत बता रहे हैं कि शक्ति न तो बाहर से अर्जित करनी है और न ही उसके लिए किसी कृत्रिम उपकरण की आवश्यकता है। अंग्रेजों की शक्ति वाह्य कृत्रिम हथियारों पर टिकी है। इसके विरुद्ध हमें सिर्फ इतना करना है कि जन–जन में विद्यमान आंतरिक शक्ति, जो अधोमुखी है, उसका उर्धमुखन करें। षट्चक्रभेदन की प्रक्रिया इस कविता में इसलिए अपनाई गई है। कविता में शक्ति की मौलिक कल्पना का सुझाव जाम्बवन्त ने दिया है जो सेनापति हैं। संकेत है कि शक्ति की यह कल्पना हिंसा से पूर्णतः अछूती नहीं है। किंतु, यह सुझाव हनुमान, सुग्रीव या लक्ष्मण जैसे किसी ओजयुक्त सेनापति का नहीं, वृद्ध व परिपक्व जाम्बवन्त का है जो अनावश्यक हिंसा की निरर्थकता को भली–भांति समझते हैं।

राष्ट्रनायक, जो कि संभवतः गांधी का प्रतीक है, शक्ति की साधना करता है। यह साधना आसान नहीं है क्योंकि अंतिम चरण में उसकी कठोर परीक्षा ली जाती है। यही वह क्षण है जहाँ राष्ट्रनायक टूट भी सकता है। पहले वह आत्मधिकार से भरता है किंतु उसके तुरंत बाद उसके भीतर शक्ति का प्रचंड आवेग उभरता है–

वह एक और मन रहा राम का जो न थका, जो नहीं जानता दैन्य नहीं जानता विनय'। यही वह चरम बिंदु है जिसकी तलाश राष्ट्रीय आंदोलन को थी दुर्गा का प्रकट होकर विजय का आशीर्वाद देते हुए 'पुरुषोत्तम नवीन' शब्द का प्रयोग यही संकेत करता है।

कविता एक अर्थ में राष्ट्रीय आंदोलन को नया सुझाव भी देती है। कठिन स्थिति में अपनी आँख निकालने या आत्मोत्ससर्ग का साहस वही साहस है, जो 1942 ई. के नारे 'करो या मरो' में दिखता है। यहाँ भी 'करो या मारो' की बजाय 'करो या मरो' कहना खुद एक संकेत है, जो आत्मसमर्पण की हिम्मत पर टिका है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह भी है कि गांधी जी के आदर्श नायक मर्यादा पुरुषोत्तम राम ही थे जो इस कविता के नायक हैं। साथ ही, राम का युद्ध को थोड़ा विराम देकर शक्ति का संधान करना गांधी जी के संघर्ष–विराम–संघर्ष की नीति को ही प्रतिबिम्बित करता है।

यह कविता एक ऐसी लम्बी कविता है, जिसमें निराला जी के स्वरचित छंद 'शक्ति पूजा' का प्रयोग किया गया है। चूँकि यह एक कथात्मक कविता है, इसलिए संश्लिष्ट होने के बावजूद इसकी सरचना अपेक्षाकृत सरल है। इस कविता का कथानक प्राचीन काल से सर्वविख्यात रामकथा के एक अंश से है। इस कविता पर वाल्मीकि रामायण और तुलसी के रामचरितमानस से कहीं अधिक बांग्ला के कृतिवास रामायण का प्रभाव देखा जाता है, किन्तु कृतिवास और राम की शक्ति पूजा में पर्याप्त भेद है। पहला तो यह की एक ओर जहां कृतिवास में कथा पौराणिकता से युक्त होकर अर्थ की भूमि पर सपाटता रखती है, तो वही दूसरी ओर 'राम की शक्ति पूजा' में कथा आधुनिकता से युक्त होकर अर्थ की कई भूमियों को स्पर्श करती है। इसके साथ साथ कवि निराला ने इसमें युगीन–चेतना व आत्मसंघर्ष का मनोवैज्ञानिक धरातल पर बड़ा ही प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत किया है। जहाँ तक तुलसी के राम और निराला के राम में तात्विक अंतर की बात है, तो तुलसी के राम ईश्वर राम हैं जो रोते, हारते–थकते नहीं हैं, लेकिन निराला ने राम को मानव चरित्र के रूप में गढ़ा तो, इसलिए निराला के राम मनुष्य की तरह हारते भी हैं, थकते भी हैं और रोते भी हैं तथा हार–थक कर जितने की कोशिश करते हैं और उसी कोशिश में साधना भी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

करते हैं।

निराला बाल्यावस्था से लेकर युवाववस्था तक बंगाल में ही रहे और बंगाल में ही सबसे अधिक शक्ति का रूप दुर्गा की पूजा होती है। उस समय शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार भारत देश के राजनीतज्ञों, साहित्यकारों और आम जनता पर कड़े प्रहार कर रही थी। हर बड़ा रचनाकार अपने धमनियों में परंपरा को बहते हुए अनुभव करता है, लेकिन वह बिल्कुल वही नहीं होता जो परंपरा होती है। वरण, परम्परा को युगीन संदर्भो से सन्दर्भित करने के लिए वह अपनी सर्जनात्मक कल्पनाशीलता का उपयोग करता है। राम की शक्ति पूजा इन अर्थो में भी कृतिवास रामायण से अलग है। ऐसे में निराला ने जहां एक ओर रामकथा के इस अंश को अपनी कविता का आधार बना कर उस निराश हताश जनता में नई चेतना पैदा करने का प्रयास किया तथा अपनी युगीन परिस्थितियों से लड़ने का साहस भी दिया।

इस कविता में युद्ध का वर्णन अधिक न होकर संकेत भर है। आंतरिक वर्णन अधिक है जैसे प्रसाद कामायनी में प्रलय वर्णन को छोड़ देते है। संकल्प एवं विकल्प की जो लड़ाई राम के भीतर चल रही थी उसके परिहार के लिए निराला साधना की जरूरत समझते हैं। निराला उस बिन्दु को प्राप्त करना चाहते थे जहाँ संकल्प बिन्दु को प्राप्त किया जा सके। इसी बिन्दु पर आकर कविता समाप्त हो जाती है। विजय वर्णन में निराला की कोई रूचि नहीं है, उस संघर्ष को उभारकर रखना उनका उद्देश्य था जो उस समय भारतीय जनमानस की लड़ाई थी।

लड़ाई, कैसे लड़ा जाए? उस समय भारतीय जन–मानस की मूल समस्या यही थी। निराला दरअसल विजय का स्वाद जानते भी नहीं थे। इसलिए इनका सारा का सारा काव्य संघर्ष का काव्य है। यह कविता कथात्मक ढंग से शुरू होती है और इसमें घटनाओं का विन्यास इस ढंग से किया गया है कि वे बहुत कुछ नाटकीय हो गई हैं। इस कविता का वर्णन इतना सजीव है कि लगता है आँखों के सामने कोई त्रासदी प्रस्तुत की जा रही है। इस कविता का मुख्य विषय सीता माता और एक अर्थ में भारत माता की मुक्ति और यह युद्ध राम–रावण का युद्ध नहीं रामत्व और रावणत्व के बीच का युद्ध है। अच्छाई और बुराई के बीच का युद्ध है। यह भारतीय और ब्रिटिश हुकूमत के बीच युद्ध है, इसलिए निराला युद्ध का वर्णन जल्द समाप्त कर यथाशीघ्र सीता की मुक्ति की बात करते है और सीता के बहाने भारत मुक्ति का संकेत देते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनामिका (प्रथम संस्करण) राम की शक्ति पूजा।
2. 'निराला', सूर्यकान्त त्रिपाठीय 'Nirala', S.T. (2014) राम की शक्ति पूजा (Hindi Poetry): Ram Ki Shakti Pooja(hindi poetry). Bhartiya Sahitya Inc. ISBN 978-1-61301-456-1.
3. राम की शक्तिपूजा–1 : वीना मेहता https://www.youtube.com/watch?v=JGDGV9VvDJA
4. राम की शक्तिपूजा–2 : वीना मेहता https://www.youtube.com/watch?v=pKbC7J7kfAo
5. राम की शक्ति–पूजा का वस्तु विन्यास (डा0 गोपाल नारायन श्रीवास्तव का लेख)
6. जयशंकर प्रसाद कृत कामायनी के कुछ अंश का भावार्थ।
7. तुलसीदास कृत रामचरित्र मानस के कुछ अंश का भावार्थ
8. कृतिवास रामायण के कुछ अंश का भावार्थ।
9. छायावाद की प्रासंगिकताः रमेशचंद्र शाह।

*****